भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1353
9 फरवरी, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

अलीराजपुर में भूकंप सूचक यंत्र

1353. इंजीनियर गुमान सिंह दामोर:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार का अलीराजपुर जिले में नर्मदा नदी के तट पर स्थित 100 गांवों में महसूस किए जा रहे भूकंप के झटकों की तीव्रता को मापने के लिए जिले में भूकंप सूचक यंत्र स्थापित करने का विचार है;
(ख) यदि हां, तो इसे कब तक स्थापित किए जाने की संभावना है;
(ग) क्या इस क्षेत्र में लगातार भूकंप के झटकों के कारण कई घर क्षतिग्रस्त हो गए हैं;
(घ) यदि हां, तो क्या सरकार द्वारा इस संबंध में उचित मूल्यांकन करने के बाद घरों को हुए नुकसान के लिए मुआवजा प्रदान करने की संभावना है;और
(ङ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क)और (ख) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केन्द्र के भूकंप सूचीपत्र के अनुसार, अलीराजपुर जिले, मध्य प्रदेश की 100 किमी की परिधि में वर्ष 1960 से लेकर 2020 तक की अवधि के दौरान 2.7 और 3.8 तीव्रता के कुल 18 छोटे भूकंप दर्ज किए गए।कुल 18 भूकंपों में से, अलीराजपुर के दक्षिण में लगभग 70 किमी पर 27.07.2003 को अधिकतम तीव्रता (परिमाण: 3.8) का एक भूकंप आया। विगत समय में, सन 1863 में अलीराजपुर के लगभग 80 किमी दक्षिण पूर्व में 5.0 तीव्रता का एक भूकंप महसूस किया गया है। हाल ही में, इस क्षेत्र में दिनांक 02.01.2021 तथा 20.10.2021 को क्रमश: 3.3 ओर 2.9 तीव्रता के दो भूकंप महसूस किए गए। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केन्द्र 152 स्थायी भूकंप केन्द्रों के साथ देश में तथा इसके आसपास भूकंप गतिविधियों की लगातार निगरानी कर रहा है, जिनकी भारत के मध्यम भाग में भूकंप का पता लगाने की न्यूनतम सीमा 3.0 तीव्रता तक है। इन 152 केन्द्रों में से, लगभग 9 स्थायी भूकंप केन्द्र अर्थात् इंदौर, सूरत, नर्मदानगर, अकोला, भोपाल, भावनगर, नासिक, उदयपुर और पालघर अलीराजपुर जिले के आस-पास स्थित हैं, जो 3.0 या इससे अधिक तीव्रता के भूकंपों की पहचान करने में सक्षम हैं। तथापि, वर्तमान भूकंपीय नेटवर्क द्वारा 3.0 से कम तीव्रता के सूक्ष्म भूकंप, जो सामान्यत: हानिकर नही होते, की पहचान नहीं की जा सकती। कम फोकस दूरी वाले ऐसे सूक्ष्म भूकंप घडघडाहट की ध्वनियां उत्पन्न करके जिले के समीपवर्ती ग्रामीणों को चेतावनी देने के लिए किए जा सकते हैं। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केन्द्र देश के लिए अपने विद्यमान राष्ट्रीय भूकंपीय नेटवर्क से कम तीव्रता (परिमाण 3.0) वाले भूकंपों की पहचान के लिए तैयारी कर रहा है।

(ग)- (ड़.) राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केन्द्र को देश में तथा इसके पडौस में भूकंपीय गतिविधि की चौबीसों घंटे निगरानी करने का अधिदेश प्राप्त है। यह केन्द्र भूकंपों के कारण घरों को हुए नुकसान का मूल्यांकन नहीं करता है। यह उल्लेखनीय है कि भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा तैयार किए गए भारत के भूकंपीय क्षेत्रीकरण मानचित्र के अनुसार अलीराजपुर जिला क्षेत्र-IIIमें आता है तथा क्षेत्र-IIके निकट है। इस क्षेत्र में क्षेत्र IV एवं V में आने वाले संवेदनशील शहरों की तुलना में भूकंप का खतरा कम है। इसलिए, भारतीय मानक ब्यूरो के कोड के अनुसार उपयुक्त उपाय यह सुनिश्चित करने के लिए किए जाएं कि इस क्षेत्र के घर तथा अन्य संरचनाएं सही इंजीनियरी तरीके से बनाई जाएं।

आपदा प्रबंधन प्रभाग, गृह मंत्रालय के अनुसार, आपदा प्रबंधन की मुख्य जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है। राज्य सरकारें अपने क्षेत्राधिकार में पहले से स्थापित राज्य आपदा प्रतिक्रिया निधि (एसडीआरएफ) से अधिसूचित आपदाओं (भूंकप सहित) के आने की स्थिति में प्रभावित लोगों को वित्तीय राहत प्रदान करती हैं। तथापि, किसी प्रतिकूल प्रकृति की आपदा के आने की स्थिति में, अतिरिक्त वित्तीय सहायता निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार राष्ट्रीय आपदा कार्यवाई निधि (एनडीआरएफ) से दी जाती है, जिसमें एक अंतर-मंत्रालयी केन्द्रीय दल (आईएमसीटी) के दौरे के आधार पर एक मूल्यांकन शामिल होता है। तथापि, गृह मंत्रालय के पास उक्त क्षेत्र में भूकंप कंपनों के कारण घरों को हुए नुकसान के बारे में कोई सूचना नहीं है।

*****